Dr. Keerti Kumar
Assistant Professor,
Dept of Psychology, S.R.A.P. College, Barachakia - MFP
(A Constituent Unit of B.R.A. Bihar University MFP)

Subject - Psychology
Topic - Survey Method
Class - B.A (Hon) Part II (Paper IV/II)
Day - Friday
Date - 17/02/2023
Period - 4th
Contact No - 9801466117, 6202215708

प्रश्न :- समाज मनोविज्ञान के सर्वेविधि के महत्व, गुण एवं दोषों का वर्णन करें?

उत्तर- सर्वेक्षण का शाब्दिक अर्थ होता है - अवलोकन करना, निरीक्षण करना अथवा ऊपर से देखना। समाज मनोविज्ञान के इस प्रकार के अनुसन्धानों का बहुत महत्व है कर्लिंगर के अनुसार - "सर्वेक्षण अनुसन्धान वैज्ञानिक अन्वेषण की वह शाखा है जिसके अन्तर्गत छोटे-छोटे आकार की जनसंख्या या समूह जनसंख्याओं का अध्ययन तथा जनसंख्याओं से चुने गये प्रतिदर्श के आधार पर इस उद्देश्य से किया जाता है कि उनके सापेक्ष सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक चरों के घटनाक्रम वितरण और पारस्परिक अन्तः सम्बन्धों को ज्ञात किया जा सके। सर्वेक्षण के अनेक प्रकार होते हैं जो सभी सामाजिक मनोविज्ञान के अध्ययन की दृष्टि से उपयोगी हैं।

1. जनसंख्यात्मक सर्वेक्षण
2. सामाजिक पर्यावरण
3. सामाजिक क्रियाओं से सम्बन्धित सर्वेक्षण
4. अभिवृत्ति सम्बन्धी
5. केन्द्रीकृत सर्वेक्षण
6. सरकारी सर्वेक्षण
7. सामान्य सर्वेक्षण
8. पुनर्त सर्वेक्षण

सर्वेक्षण अनुसंधान के चरण

1. अनुसंधान समस्या को निश्चित और साकार रूप देना :- इसके अन्तर्गत समस्या के उद्देश्यों का निर्माण किया जाता है। समस्या अध्ययन के साधन और पद्धति का चयन किया जाता है। जैसे- प्रश्नावली, अनुसूची, डाक प्रश्नावली, साक्षात्कार आदि कुछ प्रमुख हैं जिनकी सहायता से सर्वेक्षण अनुसंधानों के आंकड़े संकलन किया जाता है।

2. प्रतिचयन योजना :- सर्वेक्षण अनुसंधान में प्रतिचयन योजना बनाते समय सम्पूर्ण जनसंख्या को सर्वेक्षण [illegible] किया जाता है कि Random Sampling के प्रतिचयन की व्याख्या की जाती है।

3. अनुसूची की रचना :- सर्वेक्षण अनुसंधान के आंकड़ों का संकलन अनुसूची की सहायता से किया जाता है। अनुसूची प्रश्नावली होती है यह अनुसूची साक्षात्कार अनुसूची भी हो सकता है और डाक अनुसूची भी हो सकता है।

4. आंकड़ों का संकलन :- आंकड़ों का संकलन करते समय कई प्रकार के अनुसंधान में अध्ययनकर्ता स्वयं अध्ययन (Field Studies) करता है, यह अध्ययन फील्ड कर्मचारी के द्वारा किया जाता है। वे उत्तरदाताओं से सम्पर्क करके किया जाता है उनसे सूची भरवाया जाता है। आंकड़ों का संकलन एवं योजना के अनुसार क्रमबद्ध रूप से किया जाता है।

5. आंकड़ों का विश्लेषण :- प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए आवश्यकतानुसार coding की जाती है। सारणीयन किया जाता है और अन्तर्वस्तु विश्लेषण किया जाता है।

6. रिपोर्ट प्रस्तुतीकरण :- आंकड़ों के विश्लेषण के बाद जो तथ्य प्राप्त होते हैं, उनकी व्याख्या की जाती है और उनकी एक प्रतिवेदन तैयार की जाती है जिसे भविष्य में आवश्यकता पड़ने पर दिखाया जाता है। यह रिपोर्ट के रूप में किसी प्रश्न की कठिनाई होने पर उसको देखा जाता है।